

11/11/21

पत्रांत आत्म-प्रवासांत गीतों के संग अभिमान.  
 जिय - पदसक पर यद्युक्त / उ. सि. 19/20/2.  
 अन्याय - अर्थी गीत यद्युक्त गीत - मोक्ष -  
 धर्म - 21/18 की - पालना - यद्युक्त  
 द. सि. 688 धर्म - 22/18 लय 248  
 से पालना - वापस रोमा म. की या -  
 युक्ती ही - अथ उक्त पत्रांत के कोर काव्यही  
 मीमे अथ से कोर नही वरही ही

अथ पत्रांत की मर पर धर्म (2/11)  
 की यादी ही. पत्रांत की मर युक्त ही  
 मर से अथ की यादी धर्म अथ  
 ही  
 7

